Vol 6 Issue 2 August 2016

ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

......More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

ISSN: 2231-5063 Impact Factor : 4.6052(UIF) Volume - 6 | Issue - 2 | August - 2016

GRT Golden Research Thoughts

दलित साहित्य : सीमा व संभावनाएँ

डॉ. सौरभ कुमार
पी.एच.डी. हिन्दी शोध –केन्द्र एस.सी.डी. राजकीय महाविद्यालय,
लुधियाना.

प्रस्तावना –

दलित साहित्य का स्वरूप बड़ा ही सुंदर और आकर्षणीय बना है। इसके पीछे महान तपस्वी डॉ0 बाबा साहब अम्बेडकर का ही हाथ है। दलित साहित्य तथा साहित्यकार, सामाजिक शोषण पद्धति के विरुद्ध ही विद्रोह व्यक्त करता है। अस्पृश्यता, जातीयता, जीवन में सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक अन्याय का नाश करने वाला हथियार ही दलित साहित्य है। दलित साहित्यकारों ने अपने अनुभवों को शब्दों के जरिए साहित्य में ढालकर सेठ, जमींदार तथा सवर्णियों की ओर से होने वाले अन्यायों को कहानी, उपन्यास, नाटक, आत्मकथा कविताओं का माध्यम बनाकर सामाजिक बुराईयों का भेद खोला है। दलित एक ऐसा विशिष्ट वर्ग है जो शोषण की अन्य संरचनाओं को झेलते हुए अमानवीय छुआछूत का शिकार भी रहा है और अपनी मुक्ति के लिए संघर्ष भी करता रहा है। वर्तमान परिवेश में दलित साहित्य की आवश्यकता बढ़ गई है क्योंकि जाति-पाति का भेदभाव एवं असमानता बढ़ती जा रही है। वर्तमान परिवेश में दलित साहित्य की अत्यन्त आवश्यकता है। जैसा कि सर्वविदित है कि जिस समाज का, वर्ग का अपना साहित्य नहीं होता उस समाज या वर्ग का अपना कोई भी अस्तित्व नहीं होता। डॉ0 बी0आर0 अम्बेडकर के सिद्धांतों और आदर्शों के अलावा लिखा गया साहित्य, साहित्य तो हो सकता है लेकिन दलित साहित्य बिल्कुल नहीं हो सकता।

जयप्रकाश वाल्मीकि के अनुसार– ''दलित साहित्य का उद्‌भव दलितों में चेतना लाने की भावना से हुआ है। दलितों में अभी भी बहुत से जाति घटक हैं जिनमें सामाजिक जागृति आना शेष है और उनमें यह जागृति अम्बेडकर, फूलेवादी विचारधारा के सम्प्रेषण से ही संभव है तथा दलित साहित्य का आधार भी यही विचारधारा है। अत: अभी भी दलित साहित्य के लेखन की तथा उसके प्रसार की आवश्यकता है तथा अभी उसकी सीमाएँ तय करने का समय भी नहीं आया।1 जाति व्यवस्था की तीन विशेषताएँ हैं (1) हर जाति स्वयं को कुछ जातियों से शुद्ध मानने और कुछ जातियों के अपने से भी ज्यादा शुद्ध होने की धारणा रखती है। (2) हर जाति या उपजाति अपने सामाजिक रस्मों रिवाजों जीवन के संबंध में अपनी विशिष्ट पद्धतियां, शैलियां, रूप व परम्पराएँ अपनाती है। वैवाहिक संबंधों से लेकर दाह-संस्कारों तक हर जाति कुछ परम्पराओं का पालन करती है। (3) जाति उत्पीड़न व असमानता के प्रति असंतुष्टि की भावनाएँ स्वयं से उच्च जाति के प्रति तो होती है, लेकिन स्वयं से नीची समझने वाली जाति के प्रति जातिवादी रूख ही बना रहता है। जाति भेद न केवल लोगों को टुकड़ों-टुकड़ों में बांट देता हैं बल्कि साथ ही यह सबके मन में ऊँच-नीच का भाव भी पैदा करता है। ब्राह्मण समझता है कि हम बड़े हैं, राजपूत छोटे हैं, राजपूत समझता है कि हम बड़े हैं, कहार छोटे हैं, कहार समझता है कि हम बड़े हैं चमार छोटे हैं, चमार समझते हैं कि हम बड़े हैं, मेहतर छोटे हैं और मेहतर भी अपने मन को समझाने के लिए किसी न किसी को छोटा कह ही देते हैं। हिन्दुस्तान में हजारों जातियाँ हैं और सबमें यह भाव है।[2] डी0डी0 राउत मानव के अनुसार सामाजिक परिवर्तन और मानवीय मूल्यों की रक्षा के लिए वर्तमान परिवेश में दलित साहित्य की अत्याधिक आवश्यकता है। दलित साहित्य ही है जो राख में दबी चिंगारी के समान हमें सदैव परिवर्तन के लिए आशान्वित रखता है। दलित साहित्य को किसी सीमा में नहीं बांधा जा सकता। मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को दलित साहित्य छू सकता है।[3] संजय कुमार के अनुसार– ''अभी दलित आन्दोलन वह स्थान नहीं बना पाया है, जो अन्य का है। जिस तरह से भारतीय अर्थ व्यवस्था में आजादी के इतने वर्ष बाद भी दलित पिछड़े हाशिये पर है और जब उन्हें आरक्षण दिये जाने की बात होती है तो विरोध की गंगा बहने लगती है। आज भी शिखर पर दलित पिछड़े नहीं के बराबर हैं। अभी भी समाज में समानता नहीं आयी है। यही हाल साहित्य के साथ भी है, आवश्यकता है बराबरी की।[4]

पीने का पानी और मंदिर प्रवेश को लेकर मानवीयता को नकारने वाला हिन्दू धार्मिक परम्परा का विरोध तथा समानता का अविष्कार कर जनजागृति लाने वाला साहित्य ही दलित साहित्य है। बालकृष्ण कवठेकर का कहना है– दलित साहित्यान्दोलन महाराष्ट्र के सांस्कृतिक जीवन से अपूर्व और असामान्य महत्त्व की घटना है। हजारों वर्षों से मूक बने दलितों के अंत:करण की व्यथा और वेदनाएं आंदोलन के कारण ही इसे शब्द रूप प्राप्त हुआ है। इससे इस साहित्य को एक नयी शक्ति प्राप्त हुई है।[5]

दलित साहित्कारों ने अपनी बोलचालिक भाषा को ही सृजना के लिए उपयोग किया है। इस कारण यह साहित्य सृजना ही उनके विद्रोह की ताकत बनी है। हिन्दी दलित साहित्यकार बुद्धशरण हंस का कहना है–''दलित साहित्यकारों द्वारा दलित साहित्य लिखना उनका अभियान और अभिमान है। गैर दलित साहित्यकारों द्वारा दलित साहित्य की रचना करना एक फैशन और प्रदर्शन है।[6] दलित साहित्य हिन्दू संस्कृति को नकारने के कारण ही अन्य साहित्यों से भिन्न है। इस साहित्य में आधुनिकता और प्रगतिपथ का प्रकाश उमड़ता है। इस साहित्य में अधिकतर निम्न वर्ग का ही बोलबाला है। दलित साहित्य का हीरो भी दलित ही होता है। यह साहित्य में ढाला जाता है स्वत: पर बीती तथा सत्य घटनाओं के अनुभवों को ही दलित साहित्य में ढाला जाता है। इसलिए दलित साहित्य का स्वरूप पारम्परिक भारतीय साहित्य से हटकर दिखाई देता है। साहित्यिक क्षेत्र में इसकी अलग से पहचान है। यह साहित्य उभरकर आंखों में खटकने लगता है। जिस प्रकार एक अच्छी वस्तु पर सभी की निगाहें टिकी होती है, उसी प्रकार

दलित साहित्य पर भी अन्य साहित्यकारों की निगाहें रूकी हुई हैं। विषमतावादी समाज रचना और प्रस्थापित अन्यायपूर्ण वर्ण व्यवस्था का नाश करके पारम्परिक साहित्य के विरोध में न्याय का बिगुल बजाना और दलितों को न्यायिक आन्दोलन पर उतारने का प्रमुख कार्य की दलित साहित्य का हेतु है। ऐसी दशा में ही दलित साहित्य का स्वरूप सिद्ध होता है।

दलित साहित्य के स्वरूप के संबंध में ओमप्रकाश वाल्मीकि की मान्यता है कि दलित द्वारा दलित के जीवन पर लिखा गया साहित्य ही दलित साहित्य है। उनकी यह मान्यता है कि दलित साहित्य किसी 'आनन्द' या 'मोक्ष' की प्राप्ति के लिए, आदमी को आदमी की तरह जिन्दा रखने के लिए, उसकी अपनी निजता को स्थापित करने के लिए अस्तित्व में आया है। ओमप्रकाश वाल्मीकि के आदर्श अम्बेडकर के बौद्ध धर्म में भी निर्वाण और आनन्द की अवधारणा है। वाल्मीकि का जो लक्ष्य है, वही लक्ष्य हिन्दी साहित्य और उसकी परम्परा का रहा है। जय प्रकाश कर्दम के अनुसार 'दलित लेखन दलितों द्वारा अपने दुख-दर्द, उपेक्षा, उत्पीड़न तथा उसके विरुद्ध संघर्ष और जिजीविषा की शाब्दिक अभिव्यक्ति है। दलित लेखकों द्वारा लिखित दलित चेतनोन्मुख साहित्य ही दलित साहित्य है। रमणिका गुप्ता, श्यौराज सिंह बेचैन, तेज सिंह वाल्मीकि एवं कर्दम के समर्थक हैं, वहीं रजनी तिलक, राजकुमार सैनी दलित चेतना को लेकर गैर-दलित द्वारा लिखे गए साहित्य को भी दलित साहित्य मानने के पक्षधर हैं।[7]

दलित साहित्य के अनुशीलन से यह स्पष्ट होता है कि गरीबी और जातिवाद दलित साहित्य की रचनाओ का केन्द्र बिन्दु है और इन्हीं से मुक्ति इसका उद्देश्य। दलित समाज की अन्य समस्याएं गरीबी और जातिवाद के कारण पैदा हुई हैं। इसलिए वे इसी के इर्द-गिर्द घूमती हैं। दलित नारियों का शोषण, दलितों के मान-सम्मान की हानि, शिक्षा की समस्या, परिवार की समस्या, बेगारी प्रथा, दलितों का शोषण आदि इन्हीं से जुड़ी हुई समस्याएँ हैं। इनके पास भूमि नहीं है। ये रूढ़ियों और अन्धविश्वासों से जुड़े हुए हैं, जो शिक्षित हैं वह बेरोजगार है। दलित साहित्य में भूमि का प्रश्न, मकान का प्रश्न, बेरोजगारी का प्रश्न, शिक्षा का प्रश्न, जातिवाद के चलते सामाजिक अपमान का प्रश्न आदि उभर कर सामने आते हैं। इन्हीं समस्याओं से मुक्त होने की चेतना दलित साहित्य की विशेषता है। दलित साहित्य आज इन्हीं प्रश्नों से जूझ रहा है। दलित समाज शोषण की वर्तमान भौतिक परिस्थितियों से मुक्ति चाहता है।[8]

दलित साहित्य मध्यवर्गीय जीवन के आसपास घूमता है। दलित साहित्य का बड़ा भाग गांवों के चित्रण से भरा हुआ है। दलित साहित्य का जन्म अस्पृश्यता की कोख से हुआ है, यही इसकी विशेषता है। दलित लेखकों ने दलितों के दु:खों का जैसा वर्णन किया है वैसे अन्य लेखकों ने नहीं किया। दलितों की परेशानी, गुलामी पारिवारिक विघटन, दु:ख, गरीबी और उपेक्षापूर्ण जीवन का वास्तविक चित्रण करने वाला साहित्य ही दलित साहित्य है। पीड़ा और आह का उदात्त स्वरूप दलित साहित्य है। प्रत्येक मनुष्य को स्वतन्त्रता, सम्मान और भयहीन सुरक्षा मिलनी चाहिए। दलित साहित्य मनुष्य को केन्द्र बिन्दु मानता है। मनुष्य के सुख-दु:ख से ओतप्रोत होता है। मनुष्य को महान मानता है और उसे क्रांति की ओर ले जाता है।

दलित साहित्य के माध्यम से दलितों को सम्मान, साहस और समानता के अधिकारों से अवगत कराया जा सकता है। हां वक्त की दरकार हो सकती है पर सीमाएँ किसी साहित्य में कैद नहीं हो सकती। मूलचंद सोनकर के अनुसार- ''दलित साहित्य के सामने उपस्थित चुनौतियों का सामना ही इसकी सबसे बड़ी आवश्यकता है तथा इन चुनौतियों से निबटने के लिए आवश्यक संसाधनों के अभाव को इसकी सीमा के रूप में रेखांकित किया जा सकता है। वैसे इसकी एकमात्र आवश्यकता सामाजिक न्याय एवं सद्भाव की स्थापना के लिए है।''[9]

तेजपाल सिंह तेज के अनुसार- '' दलित साहित्य की कुछ सीमाएँ हो, सीमाओं को तोड़े बिना कुछ होने वाला नहीं है। साहित्य को किन्हीं सीमाओं में कैद करना तर्कसंगत नहीं है क्योंकि सामाजिक व राष्ट्रीय जीवन से जुड़ा ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है, जो इसकी सीमा में नहीं आता।[10]

हिन्दी के वरिष्ठ साहित्यकार प्राय: यह कहते थकते नहीं कि दलित साहित्य होता ही नहीं और न ही साहित्यकार दलित होता है। पर जब उन्हें इसकी परिभाषा देते हुए इसकी सीमाओं से अवगत करवाया जाता है तब वह कुछ हद तक इसके अस्तित्व को स्वीकारने के बारे में सोचते हैं। जब 'संत साहित्य' है, 'ललित साहित्य है तो फिर दलित साहित्य क्यों नहीं हो सकता? तब वे इसे स्वीकारते हैं। जनवादी साहित्य क्षेत्र और सीमाएं हैं इसका क्षेत्र सर्वोपरि विश्व व्यापक है।

दलित साहित्य की कुछ सीमाएँ व मर्यादायें हैं। दलितोत्थान, दलित साहित्य का मूल आधार है। कोई भी साहित्य जिसमें ब्राह्मणवादी वर्ण व्यवस्था को नकारने के विद्रोही तेवर के साथ कोई भी दलित जन चेतना के स्वर हो, वह दलित साहित्य की सीमाओं के अंतर्गत आता है। दलित साहित्य सकारात्मक साहित्य है। यह शोषितों व उपेक्षितों के हितों के लिए है। दलित साहित्यकारों को अपनी सीमाओं का प्रयोग करते हुए स्वंतत्रता, समता, सम्मान और न्याय की बराबर भागीदारी को दृष्टि में रखना जरूरी होता है। उन्हें किसी के सम्मान व स्वाभिमान को ठेस पहुँचाने वाले शब्दों, वाक्यांशों तथा पुराने पड़ गये असंवैधानिक शब्दों का उपयोग नहीं करना चाहिए। दलित साहित्यकार की दृष्टि सकारात्मक, काव्यगत, सुधारवादी समस्या निवारक होनी चाहिए। वह दलितों की दुर्दशा को तो उजागर करें और उसका हल भी सुझाए। इस साहित्य का मुख्य उद्देश्य दलित समाज की धरती से जुड़े हुए लोगों में चेतना को जगाना है।[11]

दलित साहित्य की प्रेरणा केवल डॉ0 बाबा साहेब अम्बेडकर और उनकी क्रान्तिकारी विचारधारा है, इसमें कोई संदेह नहीं है। कई समालोचक दलित साहित्य का रिश्ता कभी मार्क्सवाद से, कभी हिन्दूत्ववाद से या कभी नीग्रो साहित्य से जोड़ते हैं। दलित साहित्य की प्रेरणा न मार्क्सवादी है, न हिन्दूत्ववादी है और न ही नीग्रो। दलित साहित्य की प्रेरणा केवल आबेडकरवादी है। नीग्रो साहित्य तथा दलित साहित्य में प्रतिबिंबित व्यथा, वेदना और मानवी आक्रोश मौजूद है लेकिन नीग्रो अछूत नहीं थे और न ही हैं। भारतीय दलित अछूत था अछूत है। छुआछूत तो भारतीय जीवन की एक पहचान है।

डॉ0 अम्बेडकर की विचार और चिन्तन एक ऐसे समाज की स्थापना का था, जिसमें हिंसा न हो, भयाशंका न हो, मिथ्या अपेक्षाएं एवं आशाएं, असत्य, आश्वासन और अन्तर्विरोध न हो। आदिकाल से लेकर भारतीय संविधान लागू होने तक शूद्रो को सम्मानजनक नाम रखने का अधिकार नहीं था। इसके पीछे मनु की व्यवस्था, दलितों की हीन भावना और दबी मानसिकता थी। मनु ने कहा कि ब्राह्मण के नाम से ज्ञान, क्षत्रिय के नाम से बहादुरी, वैश्य के नाम से धन संग्रह, व्यवसाय की झलक और शूद्र के नाम से सेवा और दासत्व स्पष्ट होना चाहिए।[12] डॉ0 श्यौराज सिंह बेचैन के अनुसार- ''वर्तमान में दलित साहित्य की दिशा और दशा बहुत सही है।'' माताप्रसाद के अनुसार-''वर्तमान समय में दलित सहित्य की सभी विधाओं यथा काव्य, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, समीक्षा, लघु कहानी, आत्मकथा, शोध प्रबन्ध, जीवन चरित्र, पत्रकारिता सभी विधाओं में पर्याप्त मात्रा में रचनाएं हो रही हैं। दलित साहित्य की प्रगति का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि बहुत से विश्वविद्यालयों में अनेक छात्र दलित साहित्य पर शोध कर रहे हैं और दो दर्जन गैर दलित साहित्य की पत्रिकाएँ इस विषय पर अपने विशेषांक निकाल चुकी है। स्व: डॉ0 बच्चन सिंह ने अपनी हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास में दलित साहित्य को मान्यता दे दी है। इस प्रकार दलित साहित्य उत्तरोत्तर प्रगति कर रहा है। उक्त रचनाएँ दलितों में आत्मविश्वास और आत्मसम्मान को बढ़ावा दे रही हैं।[13]

डॉ0 पूरण सिंह के अनुसार- ''वर्तमान में दलित साहित्य, साहित्य के आसमान पर चमकता हुआ सितारा बन गया है, जो साहित्य के मठाधीशों की आंखों में चकाचौंध पैदा कर रहा है। दलित साहित्य अब किसी के रोके नहीं रूक सकता। चाहे उस पर कितने ही साहित्यिक आक्रमण क्यों न किए जायें। डॉ0

पूरण सिंह का विश्वास है कि आने वाला समय दलित साहित्य के नाम से ही जाना जायेगा।''[14]

भरत सिंह बेचैन के अनुसार– ''वर्तमान में दलित साहित्य की दशा और दिशा दोनों ही स्पष्ट है। दिशाहीन नहीं है दलित साहित्य।''[15] डी0डी0 राउत मानव के अनुसार, ''साहित्य के जितने भी रस हैं उनका गुणवत्तापूर्ण समावेश दलित साहित्य में पूरी तरह से दक्षतापूर्वक नहीं हो पा रहा है। इसलिए दलित साहित्य को दोयम दर्जे का भी आरोपित किया जाकर खारिज तक कर दिया जाता है जबकि वास्तव में संपूर्ण दलित साहित्य ऐसा नहीं है। मराठी के अलावा हिन्दी और अन्य भाषाओं में भी उत्कृष्ट दलित साहित्य लिखा जा रहा है। इसमें आज अनेक ख्यातिलब्ध दलित साहित्यकार हैं, जिन्हें देश में ही नहीं विदेशों में भी मान्यता प्राप्त हुई है।''[16]

मोहनदास नैमिशराय के अनुसार– ''वर्तमान में दलित साहित्य की दिशा और दशा लगभग संतोषजनक हैं। दलित साहित्य की दिशा वही है जिस ओर बाबा साहेब डॉ0 अंबेडकर ने संकेत किया था। उसी के तहत दलित साहित्यकार आगे बढ़ रहे हैं। हालांकि मंजिल अभी दूर है पर रास्ता तो वही है। उद्देश्य भी वही है और सामाजिक सरोकार भी।''[17]

भारतीय दलित साहित्य, भारतीय समाज तथा भारतीय साहित्य में एक अपूर्व सांस्कृतिक घटना है बाबा साहेब के पूर्व सांस्कृतिक परिवर्तन का आंदोलन परिवर्तन बीसवी सदी में दिखाई नही देता। उनके दलित मुक्ति आन्दोलन ने दलितों में समूल किया। शिक्षा के क्षेत्र में तथा सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र में भी दलितों का एक नया अस्तित्व दिखने लगा। परिस्थितियों का यथार्थ ज्ञान होने लगा और मानसिकता में उग्र क्रान्ति का बीजारोपण हुआ। अस्मिता जागृत हुई। यही सांस्कृतिक परिवर्तन था जिन हिन्दुत्ववादियों को दलितों का उत्थान अमान्य था उन्होंने बाबा साहेब तथा उनके आन्दोलन की कड़ी निंदा की। दलितों के अधिकारों को और उनकी स्वाधीनता की बात बाबा साहेब ने कही और उसे राजनीति में बुनियादी तौर पर उठाया तब राष्ट्रवादी और समाजवाद का भाषण करने वाले कई राजकीय दलों ने बाबा साहेब की निंदा की। हिन्दुत्ववादी आलोचक, जिन्हें दलित साहित्य की धारा अप्रस्तुत लगती थी, उन्होंने इस सहित्य को 'लकड़ी साहित्य' कहा। बाबा साहेब और बुद्धधम्म के साहित्य के संदर्भ में अप्रस्तुत कहा।[18]

दलित साहित्य हमारे समाज का दर्पण है, जो हमने देखा, अनुभव किया, भोगा जाना, समझा उसका अंकन उत्कृष्टतापूर्वक हुआ है। दलितत्व का निर्मूलन हमारे साहित्य का आधार है इसलिए वह सर्वव्यापी क्रान्ति का आह्वान करता है। दलित वेदना से प्रतिबद्ध साहित्य अंतर्मुखी ही रहेगा, उसकी प्रवृत्ति रोमांटिक नहीं हो सकती। यदि कोई कहता है कि दलित साहित्य अंतर्मुखता की अपेक्षा बहिर्मुखी अधिक है। वह अभिव्यक्ति में भड़कीले रंग का प्रयोग करता है, तो उसका अर्थ है हम अपने ध्येयवाद से अवश्य अलग हो रहे हैं। सहस्त्र वर्षो से मूक रहा समाज जब अभिव्यक्ति करता है, तो उसकी भाषा तीव्र हो जाती है और संयतता से व्यक्त किया गया विद्रोह अधिक चुभता है।[19] आज प्रत्येक विश्वविद्यालय में दलित साहित्य पर शोध कार्य हो रहे हैं। असंख्य पुस्तकें प्रकाशित हो रही है, जिस कारण इस साहित्य का उज्ज्वल पक्ष उजागर हो रहा है। दलित साहित्यकार इस साहित्य की उन्नति के लिए भरसक प्रयत्न कर रहे हैं। दलित साहित्य दबे हुए लोगों को सम्मान और समानता के अधिकारों से परिचित करवा रहा है। इस साहित्य को पढ़ दलितों में साहस उत्पन्न हो रहा है। दलित मुख्यत: हीनता की भावना से ग्रस्त हैं। यह साहित्य उनकी हीन भावना को जड़ से समाप्त करने के लिए आधार ढूंढ रहा है।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि चाहे दलितों की स्थिति आजादी के कई वर्षो के बाद भी दयनीय ही है पर दलित साहित्य की दशा और दिशा संतोषजनक है। आज लगभग प्रत्येक भाषा में दलित साहित्य की सृजना हो रही है। मराठी में सबसे ज्यादा दलित साहित्य रचित हो रहा है। दलितों के ऊपर जुल्म और अत्यचार की घटनानएं बढ़ रही है। निष्पक्षता से सामाजिक न्याय दिलाना और अत्याचार रोकने की बात को वोट बैंक से जोड़ा जा रहा है। दलितों का एक बड़ा समुदाय भूमिहीन मजदूरों का है। इस वर्ग के लोग सवर्णो के यहां मजूदरी करते है, जिस कारण इन वर्गो के बीच हमेशा संघर्ष व्याप्त रहता है।

1.डॉ0 रामगोपाल भारतीय, दलित साहित्य के यक्ष प्रश्न, पृ0 संख्या 49
2. डॉ0 सुभाष चन्द्र, दलित मुक्ति आन्दोलन: सीमाएँ और संभावनाएँ, पृ0 संख्या 19
3. डॉ0 रामगोपाल भारतीय, दलित साहित्य के यक्ष प्रश्न, पृ0 संख्या 49
4.वही, पृ0 – 50
5. डॉ0 सुरेश मारुति राव मूले, हिन्दी और मराठी दलित साहित्य, – एक तुलनात्मक अध्ययन, पृ0 संख्या 79/80
6.पूर्वोक्त, पृ0 संख्या – 80
7.डॉ0 राजमणि शर्मा, दलित चेतना की कहानियां बदलती परिभाषाएँ, पृ0 संख्या – 117/118
8.दिनेश राम, दलित मुक्ति का प्रश्न और दलित साहित्य, पृ0 संख्या – 60
9.वही, पृ0 – 51
10.वही, पृ0 संख्या – 51
11.डॉ0 विजय कुमार, 'सन्देश' और डॉ0 नामदेव, दलित चेतना और स्त्री विमर्श, पृ0 संख्या – 127
12.डॉ0 विजय कुमार 'सन्देश' और डॉ0 नामदेव, दलित चेतना और स्त्री विमर्श, पृ0 संख्या 283
13.डॉ0 रामगोपाल भारतीय, दलित साहित्य के यक्ष, प्रश्न, पृ0 संख्या 29
14.वही, पृ0 संख्या 30
15.वही, पृ0 संख्या 30
16.वही, पृ0 संख्या 31
17. वही, पृ0 संख्या 33
18. गंगाधर पानतावणे, दलित साहित्य दशा और दिशा, चमनलाल, दलित और अश्वेत साहित्य, पृ0 संख्या 30/31
19.वही, पृ0 संख्या 32

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org